पंजाबी रावण

श्रीमती सिया महारानी अयोध्या के राजमहल के अपने कक्ष में विश्राम कर रही थी कि तभी उनकी प्रिय दासी सुलेखा ने आकर खबर दी की पूर्व लंकापति स्वर्गवासी रावण द्वार पर खड़े हैं और उनसे मिलने की आज्ञा चाहते हैं । सीता महारानी ने मन ही मन कुछ विचार किया कि बहुत पहले तो ये ब्राह्मण वेश में आ कर मुझे धोखे से हर ले गया था आज अचानक इतने दिन बाद इसकी भटकती आत्मा अयोध्या के राजमहल के द्वार पर क्यों खड़ी है। खैर । देखते हैं । यहाँ अयोध्या में ये दुष्ट अपनी दुष्टता दिखाने की हिम्मत नहीं कर सकता है ।

“उनको ससम्मान राजमहल के विश्राम गृह में ठहराया जाये । और रामभक्त श्री हनुमान जी को संदेश पहुंचा दो कि हमने उन्हें याद किया है ।

थोड़ी देर बाद सीता महारानी पवनसुत के साथ राजमहल के विश्रामगृह में पधारीं ।
पूर्व लंकापति स्वर्गवासी रावण ने साष्टांग हो कर जनकनंदनी को प्रणाम किया और बजंरगबली की तरह मुस्कुरा कर देखते हुये जय श्री राम का उदघोष किया । उत्तर में पवनसुत ने भी जय श्री राम कहा ।

सीता महारानी ने आश्चर्य से पूछा “कहो रावण आज इधर कैसे आना हुआ ।”

रावण ने हनुमान जी की तरह एक क्षण देखा और फिर लंबी सांस लेकर छोड़ते हुए कहा “सीता माता बात तो बस जरा सी है, लेकिन देखा जाए तो गंभीर भी है ।”

अब बजरंगबली से रहा नहीं गया । वो बीच में ही बोल पड़े “पहेलियाँ क्यो बुझा रहे हो पूर्व लंकेश । साफ साफ कहो, डरो नहीं, क्या बात है ।”

रावण ने धीरे से कहना शुरू किया । “आप लोगों के यहाँ नया इंटरटेनमेंट चैनल कलर्स आता है क्या ?”

“नहीं हम लोग तो आज कल एन. डी. टी. वी. इमेजिन ही देखते है । उस पर आज कल सागर परिवार का नया रामायण सीरियल चल रहा है । और दूसरे चैनल देखने का टाईम भी नहीं रहता है । रामराज्य में सब काम ठीक ठाक चलता रहे, ये भी तो देखना पड़ता है ।” रामभक्त हनुमान ने उत्तर दिया ।

रावण ने कुछ सकुचाते हुए बात फिर शुरू की । “वो क्या है कि इस चैनल पर आजकल एक नया रियेलिटी शो शुरू हुआ है “एक खिलाड़ी एक हसीना” ।

“तो क्या हुआ आज कल तो हर चैनल पर रियेलिटी शो चल रहे हैं । इसमें इतना परेशान होने की क्या बात है ।” सीताजी ने कहा ।

रावण कुछ सेकण्ड के लिए रूका, फिर साहस कर के बोला “नहीं माते ये शो दूसरे शो की तरह नहीं है । इसमें अभी अभी कुछ दिन हुए एक बड़ा बखेड़ा हो गया था ।”

“ऐसी क्या गड़बड़ हो गई पूर्व लंकेश की तुम्हारी आत्मा को स्वर्ग छोड कर धरती पर आना पड़ गया ?” बजरंगबली को अब बातचीत में मजा आने लगा था ।

रावण ने परेशानी बतानी शुरू की “जी बात ऐसी है कि इस शो में एक क्रिकेट खिलाड़ी के साथ एक हसीन नंगधड़ंग कन्या नृत्य करती है । ये लोग नृत्य क्या करते हे जो क्रियाकलाप नितांत शांत और एकांत वातावरण मे करने चाहिए वो नृत्य के नाम पर ये साले कैमरे के सामने कर गुजरते हैं ।”

हनुमानजी जी के चहरे का भाव अब बदल चुका था “तुम ठीक कहते हो रावण, आज कल रियेलिटी शो के नाम पर बहुत नगंई दिखाई जा रही है । मैंने तो अपना केबल कनंक्शन ही कटवा दिया है । पुराने जमाने में तो एक तुम्हारी बहन सूपनखा ही रूप बदल कर डोरे डाला करती थी आजकल तो जिसे देखे वो ही वस्त्रों का त्याग करने को उतावली हुई जा रही है । लेकिन ये समस्या है तो तुम भी केबल टी.वी. देखना बंद करदो । इसमें इतना घबराने की क्या बात है ।”

“बात सिर्फ इतनी सी ही नही है” । रावण ने आगे कहना जारी रखा । “इस शो में हरभजन सिंह, वहीं पंजाबी खिलाड़ी जिसका साइमन्ड्स के साथ झगड़ा हो गया था और आई पी एल में जिसने केरल एक्सप्रेस श्रीसंत को करारा झापड़ रसीद कर दिया था, मोना सिंह को नृत्य साझीदारिन बनाये है । पिछले एपिसोड में हरभजन रावण, यानि की मेरे गेटअप में सजधज कर, 10 सिर लगाकर आया और मोना सिंह माता सीता के गेटअप में आयीं और दोनो ने जो नृत्य किया तो संपूर्ण भारतवर्ष में तूफान खड़ा हो गया ।” बताते बताते रावण के चहरा पीला पड़ गया ।

“क्या ? भज्जी रावण बनकर सीता माता के साथ डांस कर रहा था !” बजरंगबली की आँखे क्रोध से लाल हो गईं । “उस सरदार की ये हिम्मत ।”

रावण ने बजरंगबली को गुस्से में लाल पीला होते देखा तो उसकी रही सही हिम्मत भी जवाब देने लगी । धीरे से बोला “ मैं यही बताने के लिए अयोध्या आया था । जब त्रेता युग में मेरा दिमाग खराब हुआ था तब भी मैंने यह धृष्टता नहीं की थी और आज इन पंजाबियों को देखिए तो जरा । मैं तो माता सीतामहारानी के चरणों में यह निवेदन करने आया था कि इस नृत्य काण्ड में मैरा रंच मात्र भी हाथ नहीं है । आप लोग यह मत विचार करने लगियेगा कि ये सब हो न हो रावण का किया धरा है ।”

सीतामहारनी ने मुस्कुराते हुए गंभीर स्वर में कहा “मैं सब जानती हूँ पूर्व लंकेश, इस सब में तुम्हारा कोई हाथ नहीं है । इसमें दोष हरभजन और मोना का भी नहीं है । फिर सरदार तो सरदार ही रहेगा, उससे ज्यादा समझदारी की उम्मीद करना बेमानी है । कलयुग अब धीरे–धीरे

चरम की तरफ बढ़ रहा है। कलयुग ने अपनी चरम सीमा पर बाज़ार का रूप धारण कर लिया है । आज बाज़ार ही धर्म, नैतिकता, संस्कारों, आदर्शों संस्कृति, सबका शत्रु बना हुआ है । इसने सभी मानवीय मूल्यों को बिकाऊ बना दिया है । आज आदमी थोड़े से पैसों के लिए अपने सिद्धान्तों और मूल्यों को भूल जाता है । पैसा ही सबका ईमान बन गया है । जहाँ टी. वी. ही एक मात्र शिक्षक और मार्गदशक बना बैठा है वहाँ सिर्फ हरभजन और मोना को अकेले दोष देना ठीक नहीं है । दोषी है वो लोग जिन्होंने बाज़ार रूपी कलयुग को अपना सर्वस्व सौंप रखा है । ये तो कुछ भी नहीं है आगे तो और न जाने क्या क्या होगा । तुम्हें शर्मिंदा होने की जरूरत नहीं है रावण । कलयुग में हर सफल आदमी अपने आप में रावण होगा । और उनके कुकर्मों के आगे तुम्हारे कर्म तो बौने साबित होंगे । जाओ रावण तुम बेवजह लज्जित मत हो और जब तक कलयुग चल रहा है तुम भी अपना केबल कनेक्शन कटवा दो नहीं तो रात भर तुम्हारी आत्मा यही सोच सोच कर कष्ट पायेगी की कलयुग में जन्म लेते तो तुम बड़े भारी महात्मा कहलाते बेवजह सतयुग में श्री राम ने तुम्हें मात्र एक अपराध के लिए मृत्यदण्ड दे दिया ।" इतना कह कर माता सीता चुप हो गईं ।

रामभक्त हनुमान का पारा भी अब नीचे उतर चुका था । वो भी कलयुग के बाजारवाद का रूप सुन कर निराश हो गये थे ।

रावण ने साष्टांग होकर माता सीता और बजरंगबली को प्रणाम किया और वापस स्वर्ग में अपने फ्लैट की और उड़ चला ।